ISSN-0970-7603
Peer Reviewed Journal

भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका

BHARATIYA SHIKSHA SHODH PATRIKA

वर्ष 35, अंक 2, जुलाई–दिसम्बर 2016
Vol. 35, No.2, July. - December -2016

भारतीय शिक्षा शोध संस्थान
सरस्वती कुंज, निराला नगर, लखनऊ–226020 (उत्तर प्रदेश)
Bharatiya Shiksha Shodh Sansthan
Saraswati Kunj, Nirala Nagar, Lucknow-226020 (Uttar Pradesh)
Ph. No. 0522-2787816, E-mail:sansthanshodh@gmail.com

विषय-सूची

Contents

* सम्पादकीय / Editorial iii

शोधपत्र / Research Articles

* The Impact of Achievement Motivation on Creative Thinking of Secondary Class Students. — Dr. Ram P. Gupta, Kratika Katoch — 1
* विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और समायोजन पर पड़ने वाला प्रभाव : एक अध्ययन — सोनिका जैन, डॉ. विष्णु कुमार — 9
* Perception of the Performance of Female Teachers of Parishad Prathamic Vidyalaya by Community Members — Dr. Ranjana Agarwal — 18
* ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के बच्चों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन — डॉ. विकास मोदी — 23
* Inter-relationship between Swasth and School Environment towords Better Livelihood in Refrence to Students. — Dr. Chhaya Soni — 26
* A Comparative Study of Self-Concept of Disabled in Special and Inclusive Schools. — Dr. Rakesh Kumar Sharma — 32
* Acceptabilitiy of Multimedia Internet Technology among Teachers and Students of Higher Secondary Schools : A Survey — Deepa Awasthi — 41
* शिक्षा का अधिकार अधिनियम के प्रति ग्रामीण महिलाओं में जागरूकता — रीतू मडाड, डॉ. मनोज दयाल — 48
* Jiddu Krishnamurti's view point on "Right Education" — K.M. Tripathi — 51

शोध टिप्पणी / Research Notes

* Peer Observation for Teachers — Dr. Ranjana Jayaswal, Dr. Meenakshi Chandra — 58
* हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थियों में पाये जाने वाले नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन — कुसुम सजवान — 60

विविध / Miscellaneous

प्रतिवेदन– शैक्षिक संगोष्ठी 62

सामायिक गतिविधियाँ 64

विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और समायोजन पर पड़ने वाला प्रभाव : एक अध्ययन

सोनिका जैन*
डॉ0 विष्णुकुमार**

Absract

This research work will become a guidline for Headmasters and Teachers in schools. By this work researchers can improve Educational achievements of weak students of Government Schools. For this it is the duty of teachers that they should help to improve Educational Achievements and Healthy Adjustment of Students by providing higher educational systems in schools. Effects of different geographical conditions are seen in positive and negative forms of personality development of students. Through this research work the researcher can make an awareness for sound personality, scientific ideas and good moral ideas among students and teachers in schools.

शिक्षा का उद्देश्य अच्छे मानव का विकास करना है जो व्यक्ति के शरीर, विचारों तथा व्यक्तित्व को इस प्रकार विकसित कर सके कि वह स्वयं के लिए तो लाभदायक हो ही साथ ही अन्य लोगों को भी लाभ पहुँचाए। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहता हुआ ही वह अपने जीवन के विभिन्न क्रियाकलापों को सम्पन्न करता है। विद्यार्थी समाज में अपने विभिन्न क्रियाकलापों को सम्पन्न करता हुआ अपने आस–पास के सामाजिक एवं भौतिक वातावरण को भी प्रभावित करता है। किसी भी स्थान की सभ्यता, संस्कृति, समायोजनशीलता, व्यक्तित्व तथा शिक्षा प्रणाली आदि पर उस स्थान की भौगोलिक परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ता है। विश्व के विभिन्न स्थानों की भौगोलिक स्थिति में भिन्नता पाई जाती है। निकोलस हेंस ने बताया कि स्कूलों की स्थापना, उपलब्धता, छात्रों का प्रवेश अथवा स्कूल जाना, स्कूली छुट्टियों का समय, पढ़ाई की अनेक प्रक्रियाओं आदि पर स्थानीय भूगोल का प्रभाव स्पष्ट रुप से दिखाई पड़ता है। अधिक ठण्ड वाले इलाकों में सर्दी की लम्बी छुट्टियां एक उदाहरण है। अलग–अलग स्थानों पर निवास करने वाले व्यक्तियों के रहन–सहन, सभ्यता, संस्कृति, व्यक्तित्व तथा उनकी समायोजनशीलता में भिन्नता पाई जाती है। जैसे ठण्डे जलवायु वाले सुन्दर प्रकृति वाले स्थानों पर निवास करने वाले निवासी सुन्दर, परिश्रमी तथा बुद्धिमान होते हैं। इसके विपरीत जहां की जलवायु गर्म, रेगिस्तानी होती है वहां के निवासी अस्वस्थ, काले, आलसी होते है। इसी प्रकार –मानव जीवन में समायोजन बहुत ही महत्वपूर्ण है। मनुष्य अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए अपने वातावरण तथा अपनी भौगोलिक परिस्थितियों के साथ समायोजन करता है। समायोजन वह स्थिति है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति जिस समूह में रहता है उसी के अनुरुप व्यवहार करता है। स्थानीय परिस्थितियों के अनुरुप अपने आप को ढाल लेना ही समायोजन कहलाता है। आधुनिक जीवन में सफल समायोजन में व्यक्तित्व की लोकप्रियता ने व्यक्तित्व के वैज्ञानिक अध्ययन को बहुत अधिक प्रोत्साहित किया है। विद्यार्थियों को भौगोलिक परिस्थितियों में जो अनुभूतियां होती है उनका व्यक्तित्व विकास पर काफी प्रभाव पड़ता है। उचित भौगोलिक परिवेश तथा शिक्षण संस्थान के उचित वातावरण का प्रभाव परिलक्षित

* *शोधार्थी, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनू, नागौर, राजस्थान।*
** *सहायक प्रोफेसर, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनू, नागौर, राजस्थान।*

होता है। व्यक्ति अपने परिवेश में अनुकूलन की प्रक्रिया स्थापित करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहता है। सभी व्यक्तियों का व्यक्तित्व, रहन–सहन आदि सदैव वहाँ के भौगोलिक परिवेश से प्रभावित होता रहता है। जो देश कृषि की शिक्षा पर विशेष ध्यान देता है और जिस देश में विविध औद्योगिक केन्द्र होते है वहां की जलवायु का प्रधान स्रोत विभिन्न उद्योग होते है। वहां की शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी और औद्योगिक विषयों के पाठ्यक्रम पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

अतः भिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास एवं समायोजन क्षमता में भिन्नता पाई जाती है। जैसे इस शोध द्वारा अलग–अलग भौगोलिक परिवेशों में निवास करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्व, समायोजन क्षमता, स्वास्थ्य और रहन–सहन को तथ्यपूर्ण ढंग से जानने एवं समझने हेतु प्रयास किया गया है।

समस्या का औचित्य :

किसी भी अध्ययन का औचित्य उसके परिणामों की विस्तृत क्षेत्र में सार्थकता एवं उपयुक्तता के आधार पर निश्चित किया जाता है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है क्योंकि किसी भी राष्ट्र की धरोहर उस राष्ट्र के बालक होते हैं। बालक के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा अनुकूल वातावरण का निर्माण करती है। जिससे बालक का प्रत्येक परिस्थिति में पूर्ण रुप से विकास हो सके। वर्तमान में सभी को यह सिखाया जा रहा है कि हर कोई अलग है। प्रत्येक व्यक्ति का स्वयं का व्यक्तित्व है। यदि प्रत्येक व्यक्ति का एक जैसा व्यक्तित्व होगा तो निःसन्देह दुनिया वास्तव में एक उबाऊ जगह बनकर रह जाएगी। अनेक कारक है जो एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के प्रकार को परिभाषित कर रहे हैं। भिन्न भिन्न स्वभाव, व्यक्तित्व तथा भिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले व्यक्तियों का उनके समक्ष आने वाली परिस्थितियों, समस्याओं, विपरीतताओं आदि के प्रति उनका दृष्टिकोण भी भिन्न होता है। तथा इनसे वह सामना करता हुआ जीवन व्यतीत करता है। इन सभी परिस्थितियों के अनुरुप व्यक्ति स्वयं को समायोजित करता हुआ संतोषजनक जीवन व्यतीत करना चाहता है। इसी प्रकार विद्यार्थी जो कल का भावी नागरिक है अथवा यों कहें कि जीवन रुपी संग्राम में पाँव रखने से पूर्व वह भी इन्हीं परिस्थितियों के छोटे रुप से अपने भौगोलिक वातावरण के आस–पास के परिवेश में उपस्थित होने वाली परिस्थितियों, समस्याओं से रुबरु होता है और स्वयं को उसी के अनुरुप ढाल लेता है। विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के रहन–सहन, खान–पान, व्यक्तित्व आदि में विभिन्नता निश्चित रुप से पाई जाती है। अतः भिन्न भिन्न वातावरण में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्व का विकास, समायोजन क्षमता, स्वास्थ्य, तथा रहन–सहन किस प्रकार का होता है इन सभी उत्पन्न जिज्ञासाओं को पूर्ण करने के लिए शोधकर्त्री द्वारा शीर्षक–**''विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और समायोजन पर पड़ने वाला प्रभाव : एक अध्ययन''** का चयन किया गया है।

समस्या कथन :

विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और समायोजन पर पड़ने वाला प्रभाव : एक अध्ययन।

समस्या के उद्देश्य :

1. विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के बारे में अध्ययन करना।
2. विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
3. विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों का विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
4. विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अध्ययन करना।
5. विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के रहन–सहन के बारे में अध्ययन करना।
6. विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों का विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभावों से सम्बन्धित प्रश्नावली का निर्माण करना।

शोध की परिकल्पना :

1. विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

5. विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के रहन–सहन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

न्यादर्श : प्रस्तुत शोध कार्य में उदयपुर व नागौर जिले के 6–6 विद्यालयों के कक्षा 10वीं के कुल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध विधि : शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

चर : 1. स्वतन्त्र चर – विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियाँ।

2. आश्रित चर – व्यक्तित्व और समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव।

उपकरण : प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा व्यक्तित्व और समायोजन पर आधारित स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विधियाँ : 1. मध्यमान (M), 2. प्रमाप विचलन (S.D.) 3. क्रांतिक अनुपात (CR)

समस्या का परिसीमन :

1. प्रस्तुत शोध कार्य उदयपुर और नागौर जिले तक सीमित है।
2. शोध कार्य 120 विद्यार्थियों तक सीमित है।
3. शोध कार्य में सैकण्डरी स्तर के कक्षा 10वीं के कुल 120 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

विश्लेषण :

तालिका : 1

विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उसकी सार्थकता

समूह	N	M	S.D.	C.R. मूल्य
उदयपुर जिले के विद्याार्थी	60	24.733	3.210	0.129
नागौर जिले के विद्यार्थी	60	25.20	2.806	
उदयपुर जिले के छात्र	30	25.166	3.014	1.033
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	24.3	3.287	
नागौर जिले के छात्र	30	25.366	2.844	0.498
नागौर जिले की छात्राएं	30	25	2.863	
उदयपुर जिले के छात्र	30	25.166	3.014	1.086
नागौर जिले के छात्र	30	25.366	2.844	
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	24.3	3.287	0.886
नागौर जिले की छात्राएं	30	25	2.863	
उदयपुर जिले के छात्र	30	25.166	3.014	0.2189
नागौर जिले की छात्राएं	30	25	2.863	
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	24.3	3.287	1.336
नागौर जिले के छात्र	30	25.366	2.844	

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों (उदयपुर व नागौर जिला) में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ कि दोनों जिलों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है क्योंकि शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन करने पर पाया गया कि विद्यार्थियों का अध्ययन प्रकृति से सन्तुष्ट होना, परीक्षा से डर न लगना, विद्यालय में जाना अच्छा लगना तथा गृह कार्य करना अच्छा लगना आदि शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित प्रश्नों पर दोनों जिलों के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया पर कोई सार्थक अन्तर प्रतीत नहीं हुआ। उनके परिणामों में लगभग समानता प्रतीत हुई। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 2

विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास एवं उसकी सार्थकता

समूह	N	M	S.D.	C.R. मूल्य
उदयपुर जिले के विद्याार्थी	60	24.033	3.261	0.85
नागौर जिले के विद्यार्थी	60	23.633	1.976	
उदयपुर जिले के छात्र	30	23.566	3.675	1.111
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	24.5	2.795	
नागौर जिले के छात्र	30	23.9	2.758	0.797
नागौर जिले की छात्राएं	30	23.36	3.034	
उदयपुर जिले के छात्र	30	23.566	3.675	0.409
नागौर जिले के छात्र	30	23.9	2.758	
उदयपुर जिले के छात्राएं	30	24.5	2.795	1.515
नागौर जिले के छात्राएं	30	23.36	3.034	
उदयपुर जिले के छात्र	30	23.56	3.675	0.266
नागौर जिले के छात्राएं	30	23.36	3.034	
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	24.5	2.795	0.845
नागौर जिले के छात्र	30	23.9	2.758	

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों (उदयपुर व नागौर जिला) में रहने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के सम्बन्ध में अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ कि दोनों जिलों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है क्योंकि शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन करने पर पाया गया कि सभी व्यक्तियों के साथ सरलता से मित्रता करना, हमेशा प्रसन्नचित रहना तथा स्वयं को हीन या निकृष्ट न समझना आदि से सम्बन्धित प्रश्नों पर दोनों जिलों के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया में सार्थक अन्तर प्रतीत नहीं हुआ। उनके परिणामों में लगभग समानता पाई गई। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

तालिका 3

विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में अन्तर एवं उसकी सार्थकता

समूह	N	M	S.D	C.R. मूल्य
उदयपुर जिले के विद्याार्थी	60	23.633	3.036	1.124
नागौर जिले के विद्यार्थी	60	24.20	2.528	
उदयपुर जिले के छात्र	30	23.133	3.115	1.282
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	24.133	2.928	
नागौर जिले के छात्र	30	24.233	2.776	1.1055
नागौर जिले की छात्राएं	30	23.5	2.350	
उदयपुर जिले के छात्र	30	23.133	3.115	1.447
नागौर जिले के छात्र	30	24.233	2.776	
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	24.133	2.928	1.349
नागौर जिले की छात्राएं	30	23.5	2.350	
उदयपुर जिले के छात्र	30	23.133	3.115	0.515
नागौर जिले की छात्राएं	30	23.5	2.350	
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	24.133	2.928	0.136
नागौर जिले के छात्र	30	24.233	2.776	

विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों (उदयपुर व नागौर जिला) में रहने वाले विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता के सम्बन्ध में अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ कि दोनों जिलों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है क्योंकि शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन करने पर पाया गया कि समायोजन से सम्बन्धित प्रश्न जैसे – शीघ्र क्रोध नहीं आना, सहपाठी की सहायता करना तथा मेलजोल बढ़ाना आदि पर दोनों जिलों के विद्यार्थियों की प्रतिक्रियों में समानता देखने को मिलती है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

तालिका 4

विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के स्वास्थ्य में अन्तर तथा उसकी सार्थकता

समूह	N	M	S.D.	C.R. मूल्य
उदयपुर जिले के विद्यार्थी	60	24.566	3.045	0.189
नागौर जिले के विद्यार्थी	60	24.666	2.814	
उदयपुर जिले के छात्र	30	24.533	3.091	0.75
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	23.933	3.111	
नागौर जिले के छात्र	30	24.633	2.773	0.093
नागौर जिले की छात्राएं	30	24.7	2.811	
उदयपुर जिले के छात्र	30	24.533	3.091	1.188
नागौर जिले के छात्र	30	24.633	2.773	
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	23.933	3.111	1.002
नागौर जिले की छात्राएं	30	24.7	2.811	
उदयपुर जिले के छात्र	30	24.533	3.091	0.219
नागौर जिले के छात्राएं	30	24.7	2.811	
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	23.933	3.111	0.921
नागौर जिले के छात्र	30	24.633	2.773	

विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों (उदयपुर व नागौर जिला) में रहने वाले विद्यार्थियों के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ कि दोनों जिलों में रहने वाले विद्यार्थियों के स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर दिखाई नहीं दिया क्योंकि शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन करने पर पाया गया कि स्वास्थ्य से सम्बन्धित प्रश्न जैसे – स्वास्थ्य पर पहाड़ी इलाकों का प्रभाव, आंखों की रोशनी का सही होना, शारीरिक लम्बाई आदि पर दोनों जिलों के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया में लगभग समानता प्रतीत हुई। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 5

विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के रहन–सहन में अन्तर एवं उसकी सार्थकता

समूह	N	M	S.D.	C.R. मूल्य
उदयपुर जिले के विद्याार्थी	60	24.750	1.962	0.432
नागौर जिले के विद्यार्थी	60	24.916	2.254	
उदयपुर जिले के छात्र	30	25.166	1.673	1.569
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	24.4	2.091	
नागौर जिले के छात्र	30	25.233	2.275	1.097
नागौर जिले की छात्राएं	30	24.6	2.20	
उदयपुर जिले के छात्र	30	25.166	1.673	0.626
नागौर जिले के छात्र	30	25.233	2.275	
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	24.4	2.091	0.363
नागौर जिले की छात्राएं	30	24.6	2.20	
उदयपुर जिले के छात्र	30	25.166	1.673	1.123
नागौर जिले की छात्राएं	30	24.6	2.20	
उदयपुर जिले की छात्राएं	30	24.4	2.091	1.90
नागौर जिले के छात्र	30	25.233	2.275	

निष्कर्ष –

विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों (उदयपुर व नागौर जिला) में रहने वाले विद्यार्थियों के रहन–सहन के सम्बन्ध में अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ कि दोनों जिलों में रहने वाले विद्यार्थियों के रहन–सहन में सार्थक अन्तर दिखाई नहीं दिया। शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन करने पर पाया गया कि रहन–सहन से सम्बन्धित प्रश्न जैसे – विद्यार्थियों द्वारा हरी सब्जियों का प्रयोग, गर्मी में गर्म कपड़ों का उपयोग न करना, हल्के रंग के कपड़े पहनना तथा उनके रहन–सहन पर भौगोलिक वातावरण का प्रभाव आदि पर दोनों जिलों के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया में लगभग समानता प्रतीत हुई। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों के रहन–सहन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शैक्षिक निहितार्थ :

प्रत्येक शोध कार्य का एक विशेष महत्त्व होता है। उस शोध का महत्त्व तब और बढ़ जाता है जब प्राप्त निष्कर्ष उचित प्रतीत होते है। निष्कर्षों की सार्थकता उस समय अधिक होती है जब उसका शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक शोधकार्यों में महत्त्व हो। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्त्व, समयोजन क्षमता, स्वास्थ्य तथा रहन–सहन आदि आयामों पर भौगोलिक वातावरण के प्रभावों के आधार पर जो निष्कर्ष निकलकर शोधकर्त्री के समक्ष आए है उन निष्कर्षों में कुछ बातों की ओर स्पष्ट रूप से ध्यान आकर्षित किया गया है। विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले विद्यार्थियों का स्वास्थ्य कैसा होता है, उनका रहन–सहन कैसा होता तथा उन पर परिवेश का क्या प्रभाव पड़ता आदि अनेक बातों को जाना जा सकता है। विद्यार्थियों का स्वस्थ शरीर उचित व्यक्तित्त्व विकास उनके उचित रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा पर निर्भर होता है अतः विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व विकास, स्वास्थ्य और रहन–सहन में आई कमियों को दूर कर उनके स्वस्थ व्यक्तित्त्व का विकास किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध को सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के रूप में अध्ययन किया जा सकता है और भावी शोध के लिए अध्ययन का बिन्दु भी लिया जा सकता है। इस प्रकार शोधकर्त्री द्वारा दो जिलों के विद्यार्थियों के मुख्य 5 आयामों को सम्मिलित कर यह शोध कार्य पूर्ण किया गया।

भावी शोध हेतु सुझाव :

1. प्रस्तुत शोध में उदयपुर व नागौर जिलें के अलावा अन्य जिलों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
2. शोधकर्त्री द्वारा शोध 10वी कक्षा (सैकण्डरी स्तर) के विद्यार्थियों पर किया गया। भावी शोधार्थी इस कार्य को उच्च प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर, सीनीयर स्तर, स्नातक तथा स्नाकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों पर भी कर सकता है।
3. शोधार्थी द्वारा शोध केवल विद्यालय के विद्यार्थियों पर किया गया। जब कि भावी शोधार्थी द्वारा इस शोध कार्य को विद्यार्थियों के साथ–साथ, शिक्षकों, अभिभावकों पर भी किया जा सकता है।
4. शोधकर्त्री द्वारा केवल क्षेत्र, लिंग–भेद व स्तर के आधार पर समूह बनाकर किया गया। भावी शोधार्थी द्वारा न्यादर्श को आयु व संकाय के आधार पर अलग–अलग समूहों में विभक्त करके किया जा सकता है।
5. शोधकर्त्री द्वारा समय की सीमितता के कारण न्यादर्श 120 का लिया गया। भावी शोधार्थी द्वारा अपना न्यादर्श अधिक ले सकता है।
6. शोधकर्त्री द्वारा किया गया विद्यार्थियों पर परीक्षण अशाब्दिक था। जब कि भावी शोधार्थी अपने शोध में शाब्दिक परीक्षण भी कर सकता है।

सन्दर्भित साहित्य :–

* अस्थाना, बिपिन एवं अस्थाना, वेता (2007/08) ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
* बघेला डॉ. एच.एस. (2007) ''शैक्षिक एवं उदीयमान भारतीय समाज'' राजस्थान प्रकाशन, जयपुर–2।
* भाटिया के.के. (2006) ''शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मनोविज्ञान'' कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
* चौबे प्रसाद सरयु (2008) ''तुलनात्मक शिक्षा'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
* कपिल, एच. के. (2007) ''अनुसन्धान विधियाँ व्यवहारिक विज्ञानों में'' एच. पी. भार्गव, बुक हाउस, जयपुर।
* कपिल, एच. के. (2009) ''अनुसन्धान विधियाँ''एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
* कॉल, लोकेश (1998) ''शैक्षिक अनुसन्धान की कार्यप्रणाली'' चरखी दादरी : आनन्द बुक डिपो, मेरठ।

* माथुर, डॉ. एस.एस. ''शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
* मिश्र, डॉ. करूणाशंकर (2007) ''भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
* मिश्रा, डॉ. महेन्द्र (2007) ''भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा दर्शन'' ज्ञान प्रकाशन, शाहपुरा।
* परवीन, आबिदा (2006) ''शिक्षण एवं अधिगम के मनो–सामाजिक आधार, आस्था प्रकाशन, आगरा।
* परवीन, आबिदा (2008) ''शिक्षा मनोविज्ञान'' आस्था प्रकाशन, जयपुर।
* पाण्डेय, के. पी. (1985) ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', दुआबा हाउस, दिल्ली।
* पाठक, पी. डी. (2007–2008) ''शैक्षिक मनोविज्ञान'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
* रायजादा, बी. एस. वर्मा वन्दना (2008) ''शिक्षा में अनुसन्धान के आवश्यक तत्त्व'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
* शर्मा, आर. ए. (2009)''शिक्षा अनुसन्धान'', आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
* शर्मा, गणपतराम एवं व्यास, हरिश्चन्द्र (2007) ''अधिगम शिक्षण और विकास के मनोसामाजिक आधार ;राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
* शर्मा, रामनाथ एवं शर्मा, रचना (2004) ''उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'' एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली।
* सरीन, शशिकला एवं सरीन, अंजनी (2007/08) ''शैक्षिक अनुसन्धान विधियाँ'' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
* सिंह, अरूण कुमार, सिंह आशीष कुमार (2003) ''आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान'' मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
* सिंह, रामपाल, शर्मा ओ. पी. (2007/08) ''शैक्षिक अनुसन्धान एवं सांख्यिकी'' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
* सुखिया, एस. पी. मेहरोत्रा आर. एन. (1991) ''शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्त्व'' आगरा :विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
* श्रीवास्तव, रामजी सिंह नारायण अवध एवं शर्मा गोपाल (1996) ''व्यक्तित्व मनोविज्ञान'' मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

वेब साइट :

* http : // psychology.suite lol.com/article.cfm/the extrovert
* http : // www. Essortment. Com/ life style/personalitytips sbzd. htm
* http : // en. wikipedia.org/wiki/extraversion-and-introversion

लेखकों हेतु सूचना

भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका में अपना लेख/शोध टिप्पणी छपवाने के इच्छुक लेखकों को सूचित किया जाता है कि आलेख भेजते समय प्रक्रिया शुल्क भेजने की आवश्यकता नहीं है। सम्पादक मण्डल द्वारा लेख प्रकाशनार्थ स्वीकृत होने पर प्रक्रिया शुल्क भेजने के लिए अनुरोध करने पर शुल्क प्रेषित करें। धन्यवाद

सम्पादक मण्डल